

ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग सिद्धयोग

(आध्यात्मिक उत्थान एवं रोग मुक्ति हेतु)



शक्तिपात दीक्षा एवं कुंडलिनी जागरण

ई-मासिक (पूर्णतः निः शुल्क)

सितम्बर 2020 ■ अंक : 02



“इस शरीर रूपी सुंदर अन्ध को पढ़ना चाहते हो तो नाम (मंत्र) ही जपो।” - गुरुदेव सियाग

क्या किसी व्यक्ति की निर्जीव तस्वीर से
स्वतः ध्यान एवं योग हो सकता है ?

जी हाँ, क्योंकि गुरुदेव सियाग की तस्वीर में अनन्त गुरुत्वाकर्षण बल है !!

ॐ श्री गंगार्इनाथाय नमः



पूज्य सदगुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग



बाबा श्री गंगार्इनाथ जी योगी (ब्रह्मलीन)

• अमर तस्वीर •

" मेरी तस्वीर कभी नहीं मरेगी
जब तक यह सृष्टि रहेगी मेरी तस्वीर भी रहेगी "

- गुरुदेव श्री सियाग



■ अनुक्रम ■

- 01. मेरे आध्यात्मिक जीवन का प्रारम्भ.....04
- 02.गुरुदेव की दिव्य लेखनी से- भारत की स्थिति...07
- 03.साधना में सावधानी- स्वामी विवेकानन्द.....08
- 04.साधकों के लेख09
- 05.अहैतु की कृपा.....11
- 06.श्री गुरुदेव का आदेश12
- 07.ध्यान की विधि / ध्यान कैसे करें.....14
- 08.अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क.....15

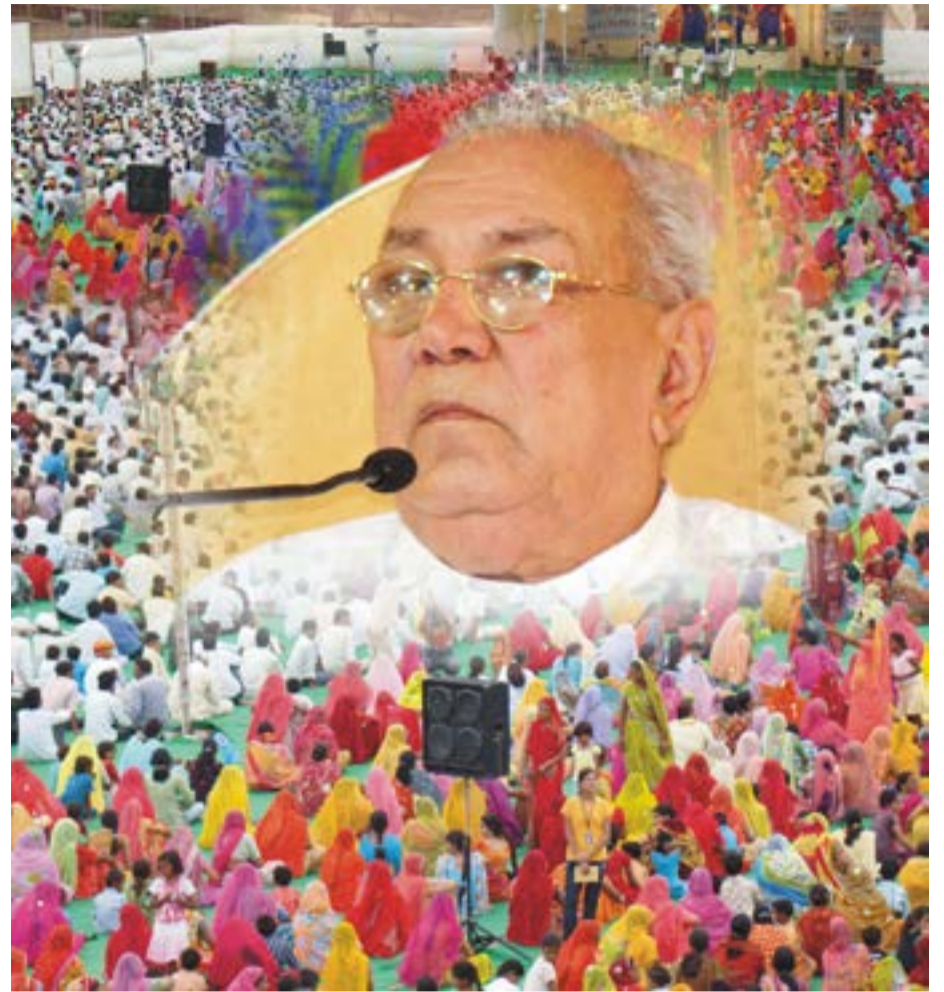
निःशुल्क संजीवनी मंत्र के लिए: +91 8010882288



मेरे आध्यात्मिक जीवन का प्रारम्भ

-गुरुदेव श्री सियाग

मैं मेरे प्रारम्भिक जीवन में, पूर्ण रूप से निरीश्वरवादी व्यक्ति रहा हूँ। ईश्वर नाम की किसी शक्ति में मुझे कोई विश्वास नहीं था। मैं, मानव की एक मात्र सत्ता में ही विश्वास रखता था, क्योंकि प्रारम्भ से ही मैं, नौकरी में मजदूर संगठन में काम करने वाले व्यक्तियों के सम्पर्क में आ गया था। अतः मेरा झुकाव राजनीति की तरफ अधिक होता गया। “मेरा मूल रूप से यह स्वभाव रहा है कि मैं अपनी मान्यताओं पर हमेशा अडिग रहता हूँ।” इस प्रकार अपने पथ पर चलकर कसे कमसमय में हर काम को पूरा करके उसके परिणाम की अपेक्षा करता हूँ। मैं ऐसे किसी काम में विश्वास नहीं रखता हूँ, जो लम्बे समय तक कोई परिणाम न दे मेरी मान्यता है कि जिस प्रकार किसी खाद्य पदार्थ को मुख में डालते ही उसके स्वाद की प्रत्यक्षानुभूति होने लगती है, उसी प्रकार हर काम के बारे में प्रत्यक्षानुभूति होनी चाहिए। परिणाम के अभाव में कोई भी काम करना व्यर्थ समझता हूँ। आज की “बहिर्मुखी” आध्यात्मिक आराधना से कोई प्रत्यक्षानुभूति नहीं होती है, केवल अंधविश्वास के सहारे मनुष्य पूरे जीवन, कर्मकाण्ड में उलझा रहता है, परन्तु फिर भी उसे कुछ नहीं मिलता।



इस युग के चतुर धर्म गुरुओं ने बहुत चतुराई से मान्यताएँ और सिद्धान्त बना रखे हैं। हर काम का (धार्मिक) परिणाम अगले जन्म में मिलेगा, अतः श्रद्धा और विश्वास के साथ जीवन भर तेली के बैल की तरह मनुष्य को चलाते रहते हैं।

इस प्रकार संसार के असंख्य मनुष्यों का जीवन निरर्थक बना रखा है। यही कारण था कि मैं, धीरे-धीरे पूर्ण नास्तिक बन गया। क्योंकि मेरा यह स्वभाव है कि मैं जैसा सोचता हूँ, वही कहता हूँ और जो कहता हूँ वही करता भी हूँ। लोग मात्र कहने को नास्तिक हैं, थोड़ा कष्ट आते ही नास्तिकता काफूर हो जाती है। रूस जैसे देश ने भी दूसरे विश्व युद्ध में सभी धर्मों के प्रार्थना स्थल पुनः खोल दिए थे। परन्तु मैं कालीदास की तरह

अपने हठ पर अड़ा ही रहा। इस प्रकार ज्योंही यह अति अपनी चरम सीमा का अतिक्रमण करने लगी, भारी विस्फोट हो गया। जैसी स्थिति हिरोशिमा वासियों की हुई, मैं ठीक वैसी ही स्थिति में पहुँच गया। ऐसी विचित्र भयावह मानसिक स्थिति हो गई कि कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। सारे भौतिक उपचार असफल हो गए। स्थिति ऐसी भयंकर हो चुकी थी कि मैं स्वयं यह सोचने लगा कि अब अन्तिम समय अधिक दूर नहीं है।

ऐसी स्थिति में मेरे एक मित्र श्रीराम दुबे ने गायत्री मंत्र का जप करने की सलाह दी। मैं जिस सत्ता में कुछ भी विश्वास नहीं रखता था, मृत्यु भय के कारण सहर्ष जैसा बताया, वैसा करने को तैयार हो गया। उस समय की मेरी मानसिक स्थिति ऐसी थी कि एक तरफ तो मृत्यु मुँह बाये खड़ी थी, दूसरी तरफ उस अदृश्य शक्ति से प्राण रक्षा की करुण पुकार कर रहा था। ऐसी स्थिति में “एकाग्रता” और “करुण पुकार” कैसी होगी? आसानी से समझी जा सकती है। विधिवत् सवा लाख जप करने का लक्ष्य था और इस प्रकार करीब साढ़े तीन महीने का समय इस कार्य में लगा। इतने लम्बे समय तक भी एकाग्रता और करुण पुकार की स्थिति निरन्तर एक जैसी ही बनी रही। प्रातः चार बजे उठ कर, सवा सात बजे तक



और शाम को सात से नौ बजे तक यह जप का कार्यक्रम अबाध गति से चलता रहता था। जिस दिन सवा लाख जप पूरे हो गए, उसके अगले दिन जप बन्द कर दिया। परन्तु आदत वश प्रातः ही ठीक चार बजे नींद खुल गई। क्योंकि जप करना नहीं था; आँख बंद किये बिस्तर पर ही लेटा रहा। सन् 1968 की सर्दी में प्रारम्भ होने वाली नवरात्रि से जप प्रारम्भ किया था। अतः काफी सर्दी पड़ रही थी। मैं रजाई ओढ़े आँख बंद किए लेटा हुआ था कि क्या देखता हूँ कि “मेरे अन्दर नाभि से लेकर कण्ठ तक एक अजीब प्रकार की सफेद रोशनी ही रोशनी दिखाई दी।” रोशनी के अलावा शरीर का कोई अंग जैसे लीवर, तिल्ली, फेफड़े, हार्ट आदि कुछ भी दिखाई नहीं दिया। मुझे यह देखकर अचम्भा हो रहा था कि रोशनी आँखों से मिलती है, फिर यह अन्दर कैसी रोशनी है? इसके अतिरिक्त ऐसी भयंकर सफेद रोशनी में

भी कोई अंग क्यों दिखाई नहीं देता है? मैं ज्यों ही उधर अधिक एकाग्र हुआ तो मुझे भँवरे के गुँजन की आवाज सुनाई दी जो कि नाभि में से आ रही थी। मैंने सोचा पेट में भँवरे की आवाज कैसे आ रही है? ज्यों-ज्यों मैं, उस आवाज की तरफ एकाग्र होता गया, मुझे स्पष्ट सुनाई देने लगा कि गायत्री मंत्र अपने आप ही अन्दर जपा जा रहा है, उसको जपने वाला कोई नजर ही नहीं आया फिर भी वह अबाध गति से निरन्तर चलता रहा। करीब 10-15 मिनटों तक यह सब देखता, सुनता रहा और अपने मन में सोचता रहा कि कैसी विचित्र बात है कि रोशनी आँख से आती है और आवाज कण्ठ से परन्तु यह सब उन अंगों से बहुत नीचे ही कैसे सुना और देखा जा रहा है? करीब पाँच बजे स्नानघर में नल का पानी जोर से फर्श पर गिरा तो ध्यान भंग हो गया। बच्चों ने शाम को नल खुला छोड़ दिया था। इसके बाद उठकर नित्यकर्म से निवृत्त हो कर अपने कार्य पर चला गया। सोचा; इतने लम्बे समय तक एक ही कार्यक्रम चलने और निरन्तर ध्यान उधर ही रहने के कारण ऐसा ख्याल रह गया होगा। परन्तु इसके बाद एक ऐसा परिवर्तन आ गया कि मैं पान, सिगरेट, चाय आदि का प्रयोग करने में पूर्ण रूप से असमर्थ हो गया। इनके इस्तेमाल का ख्याल आते ही बहुत

भयंकर घबराहट फिर होने लगती थी। इस प्रकार चाहते हुए भी इन वस्तुओं का इस्तेमाल करना असम्भव हो गया। किसी के साथ खाना खाते और जीवन के किसी भी क्षेत्र में मुझे थोड़ा सा भी झूठ बोलते हुए भी भारी घबराहट होती थी। क्योंकि जप पूर्ण रूप से बन्द कर चुका था। अतः धीरे-धीरे यह स्थिति शान्त हो गई और एक साधारण व्यक्ति की तरह, मैं फिर जीवन व्यतीत करने लगा। परन्तु एक विचित्रता शरीर में आ गई कि जीवन के किसी उद्देश्य पर अगर मेरा दिल-दिमाग अधिक एकाग्र होकर सोचने लगता तो उसका स्पष्ट परिणाम टेलीविजन की तरह बहुत पहले स्पष्ट नजर आ जाता और आगे चलकर वह घटना ठीक वैसे ही घटती जैसी मुझे दिखी थी। इस प्रकार करीब साल भर तक मुझे असंख्य प्रमाण निरन्तर मिलते ही गए और सभी भौतिक जगत् में ठीक वैसे ही घटित होते चले गये जैसे मुझे दिखे थे। “शब्दों के एक पुँज में ऐसी विचित्र सामर्थ्य और शक्ति होती है, उसकी मुझे कल्पना भी नहीं थी।” अतः जिज्ञासावश मैंने फिर आराधना करने की सोची। विचार आया उसे बड़ी शक्ति की आराधना करने का निर्णय लेकर, आराधना प्रारम्भ कर दी।

क्रमशः...

गुरुदेव की दिव्य लेखनी से भारत की स्थिति...

आज भारत में जितनी तामसिकता है, उतनी किसी युग में नहीं रही। आज देश में जितना अविश्वास है, उतना पहले कभी नहीं रहा। आज देश का हर व्यक्ति एक-दूसरे को ठगने का प्रयास कर रहा है। कोई समझ नहीं पा रहा है, देश किसदिशा में आगे बढ़ रहा है। ईश्वर पर सही अर्थों में किसी का विश्वास रहा ही नहीं। हर व्यक्ति भविष्य के बारे में सर्वाधिक चिन्तित है। सभी लोग लोभ, लालच के वशीभूत होकर येनकेन प्रकारेण धन संग्रह में लगे हैं। ऐसे लोगों की संख्या देश में बहुत तेजी से बढ़ रही है। देश का आधे से ज्यादा धन, इस वृत्ति के लोगों के पास अनाधिकृत रूप से काले धन के रूप में जमा किया हुआ पड़ा है। एक तरफ लोगों को खाने-पीने की मूलभूत जरूरत पूरी करने के लिए धन नहीं मिल रहा है, दूसरी तरफ खर्च करने को कोई जगह नहीं है। जब तक सरकार में बैठे लोग धार्मिक और चरित्रवान् नहीं होंगे, देश का उत्थान असंभव है। मैं देख रहा हूँ, ऐसी वृत्ति के लोगों का पतन प्रारम्भ हो चुका है, सबसे खुशी की बात तो

माया का असली स्वरूप मुम्बई में देखो..

“मानव को माया के चक्र में कभी नहीं फँसना चाहिए। माया हमेशा मोहजाल में फँसाती है। मुम्बई के अधिकतर लोग इसी चक्र में फँसे बेतहासा भागे जा रहे हैं। उन्हें माया में शांति का भ्रम हो रहा है। परन्तु सच्चाई यह है कि इस महानगरी में जितना भय और अशांति है, उतनी मुझे और कहीं नजर नहीं आयी।”

- गुरुदेव श्री सियाग
०१.१०.२०००, मुम्बई

यह है कि इस बार यह कार्य ऊपर से प्रारम्भ हुआ है, अतः नीचे तक फैलने में अधिक देर नहीं लगेगी। किसी हद तक यह परिवर्तन नीचे तक पहुँच चुका है, यह बहुत ही शुभ लक्षण है।

-समर्थ गुरुदेव श्रीरामलाल जी सियाग
19.9.1997, जोधपुर

साधना में सावधानी ...

तुम्हारी साधना की गाड़ी पटरी पर चल निकली है, किन्तु एक बात का विशेष ध्यान रखना, कि अन्तर की आवाज सदैव ही सत् की आवाज नहीं होती। कई बार वासनामय मन भी बड़ी विवेकपूर्ण तथा युक्तिसंगत बातों से मनुष्य को बहला-फुसला कर भ्रम में डाल देता है तथा कुमार्गगामी बना देता है।

जब कोई अन्तर में सत् की आवाज सुनने लगता है तथा वासना एवं अकर्तव्य की अवहेलना करता है तो वासनात्मक मन भी अन्तर की आवाज का रूप धारण कर जीव को मार्ग से भटकाने का प्रयत्न करने लगता है। मन सभी प्रकार के हथकंडों से अवगत है। वह विवेक तथा युक्ति का भी, अपनी स्वार्थपुर्ति लिए उपयोग करने में सक्षम है जीव वासनामय मन की आवाज को सत् स्वरूप शक्ति की आवाज समझ कर भ्रमित हो जाता है तथा धर्म का पथ त्याग देता है, इसलिए इस विषय में बड़ी सावधानी की आवश्यकता है।



आध्यात्मिक जीवन का सबसे बड़ा सहारा है ध्यान !

ध्यान के द्वारा ही हम भौतिक भावनाओं से अपने आपको स्वतंत्र कर लेते हैं। ध्यान करते समय हमें कोई बाहरी साधनों पर अवलम्बित नहीं होना पड़ता। ध्यान, बुरी से बुरी वस्तु में भी अपना सौरभ उत्पन्न कर सकता है। वह अत्यन्त दुष्ट मनुष्य को भी देवता बना देता है। सम्पूर्ण स्वार्थ भावनाएं और शत्रुता नष्ट हो जाती है। शरीर का जितना कम खयाल हो उतना ही अच्छा है क्योंकि यह शरीर ही है जो हमारा अधः पतन करता है।

-स्वामी विवेकानन्द

साधकों के लेख....

गुरुदेव ने कहा है कि, इस योग का उद्देश्य बीमारियां दूर करना नहीं बल्कि मानव का दिव्य रूपांतरण करना है क्योंकि यह कार्य बाकी था। बीमारियां दूर तो शुरू में ही हो जाती क्योंकि समाधि के लिए पहली शर्त है पूर्ण रोग मुक्ति। आज हम देखते हैं कि इस योग की वजह से गुरुदेव की असीम कृपा से लाखों लोग विश्व में दिव्य रूपांतरण के पथ पर चल रहे हैं। ये दिव्य देह वाले मानव क्या करेंगे? ये धरती पर एक दिव्य समाज का निर्माण करेंगे। सतयुग का निर्माण करेंगे। कलियुग में आज तामसिक शक्तियों के पास तमाम संसाधन पर कब्जा है। सत्ता पर उनका कब्जा है। विश्व स्तर पर उनका बोलबाला है। जो वे अपनी तामसिक सोच से कर सकते हैं वह करने के करीब आ चुके हैं। उन्होंने परमाणु बम बना लिए मगर इंसान को शांति नहीं दे पाए। चांद और मंगल पर इंसान को बसाने की योजना पर काम कर रहे हैं पर धरती के इंसान का जीना दूभर कर दिया है। आज के इंसान को यह अंदेशा रहता है कि किसी भी पल वह भाप बनकर उड़ जाएगा। डरावने सपने आते हैं। मानव के अस्तित्व को नष्ट करने का सामान बना कर तैयार बैठे हैं।

अब लगता है कि बदलाव का समय आ गया है। हम कलियुग और सतयुग के संधिकाल काल पर खड़े हैं। सतयुग में कैसे मानव निवास करते हैं यह सर्व विदित है। तामसिक लोग सतयुग में नहीं रह सकते। इसीलिए गुरुदेव ने इस दिव्य योग के खजाने को खुला लुटा दिया है। बिना किसी साधक की पात्रता पर गहन विचार किए सबको सुनहरा मौका दे दिया है कि इस खजाने में से तुम भी हिस्सा ले सकते हो।

सुरक्षित रूप से कुण्डलिनी जागरण करके अपना दिव्य रूपांतरण कर सकते हो। पर सोया हुए मानव अब भी किन्तु परन्तु अगर मगर but लेकिन और तर्क वितर्क में उलझा रहता है तो यह उसकी

“यदि धन के द्वारा हम दूसरों की भलाई कर सकते हैं, तब तो वह काम की चीज है। अन्यथा वह धन अनर्थ का घर है और जितना शीघ्र उससे हम अपना पिण्ड छुड़ा सकें, उतना ही अच्छा।”

— स्वामी विवेकानन्द

चाँइस है। सुनहरा मौका बार बार नहीं मिला करता है उसका एक समय होता है। यह योग इसी जन्म में साधक को मोक्ष जैसी सर्वोच्च अवस्था प्रदान करने की सामर्थ्य रखता है। आपने सुना होगा कि सभी धर्मोपदेशक कहते हैं कि मोक्ष पाना बेहद मुश्किल है। लगभग असम्भव के करीब है। जन्म पर जन्म लगते हैं तब कोई संभावना बनती है। मगर गुरुदेव ने कहा है कि यह योग आपको इसी जन्म में मोक्ष देगा। जीते जी मोक्ष देगा। जन्म जन्मांतर नहीं लगेंगे। यह सुनकर पूरा धार्मिक जगत सन्न है। गुरुदेव का कोई सामना ही नहीं कर पा रहा है आज दिन तक। उन्होंने ऐसी बात बोल दी खुलकर कि सब असमंजस में आ गए। लेकिन यह भी पूरी संभावना है कि बहुत से बड़े बड़े संत तो चुपचाप यह ध्यान करते होंगे। हर इंसान धरती पर मोक्ष प्राप्ति के लिए ही आता है। वह नहीं मिलता तो फिर आता जाता रहता है।

जन्म मरण का यह चक्कर चलता रहता है तब तक, जब तक कि कोई समर्थ गुरु अपनी असीम कृपा से उसका यह चक्कर समाप्त नहीं कर देता। मोक्ष यानी ईश्वर दर्शन या कहें ईश्वर की प्रत्यक्ष अनुभूति। जन्म मरण के चक्कर से मुक्ति। इससे बड़ी क्या

उपलब्धि इंसान को चाहिए? जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य ही मिल गया और किसी बात की गुंजाइश ही नहीं रही। जो यह योग करता है उसका मोक्ष पक्का है। ईश्वर प्रत्यक्षानुभूति पक्की है। उसकी आत्मा यह देह छोड़ने के बाद वापस जन्म नहीं लेगी। अमर हो जाएगी। इतनी बड़ी उपलब्धि की बात सीना ठोक कर कौन सा गुरु कह सकता है यह हम नजर दौड़ाते हैं तो कोई नहीं मिलता। इसलिए हरेक पल का सदुपयोग करते हुए सघन मानसिक जप अधिकाधिक कीजिए, ताकि अजपा शुरू हो जाए और फिर अनाहत नाद शुरू होकर ईश्वर के प्रत्यक्ष अनुभूति का दुर्लभ समय करीब आता जाए।

जय श्री गुरुदेव

- एक साधक

“आप तो केवल यहाँ मुझे देखो आज्ञाचक्र पर और जो नाम बताया वह जपो बस! इससे आगे आपकी ड्यूटी नहीं है और इससे कुछ नहीं परिवर्तन होता तो मैं तो कहता हूँ भाई, दूसरा गुरु देखो!”

- गुरुदेव सियाग

अहैतु की कृपा!

“ऐसी अहैतु की कृपा से मिली दौलत ही मैं संसार में बाँटने निकल पड़ा हूँ। मेरा इसमें कुछ भी नहीं है। तो मात्र उस परम आत्मा का सेवक हूँ। मैं तो सेवा के बदले मजदूरी मात्र का अधिकारी हूँ। जो कुछ बाँट रहा हूँ, उस धन पर मेरा रत्ती भर भी अधिकार नहीं है।”

-समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलालजी सियाग
27 फरवरी 1988

“मुझे स्पष्ट बता दिया गया है कि हर परिवर्तन का समय सुनिश्चित है। समय आने पर सारी परिस्थितियाँ अनुकूल होकर थोड़े से प्रयास से ही सारे कार्य सम्पूर्ण हो जायेंगे।”

-समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलालजी सियाग
01 मार्च 1988

ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः



■ गुरुदेव का आदेश ■

“यह कलियुग है, इसमें तामसिक शक्तियों का साम्राज्य है। मेरे या गुरुदेव के नाम से आपको कोई कुछ भी कहे, विश्वास मत करना। अगर मुझे या गुरुदेव को कोई आदेश या दिशा-निर्देश देना होगा तो सीधा आपको दिया जाएगा। ‘गुरु’ कभी किसी के माध्यम से संदेश नहीं देता है। भविष्य में कोई भी व्यक्ति मेरे या गुरुदेव के नाम से कुछ भी कहे, विश्वास मत करना। आपको दिशा-निर्देश हो और वह भी ध्यान के समय उसी को सत्य मानना।”

- समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

08 सितम्बर 1994



"इस समय सभी धर्माचार्य शास्त्रों में वर्णित बातों को वैदिक तर्क और शब्द जाल के सहारे पाप-पुण्य और स्वर्ग-नर्क का काल्पनिक भय दिखाकर, समझाने का असफल प्रयास कर रहे हैं। हमारे दर्शन के अनुसार ईश्वर प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार का विषय है।"

- गुरुदेव श्री सियाग

ध्यान की विधि / ध्यान कैसे करें:

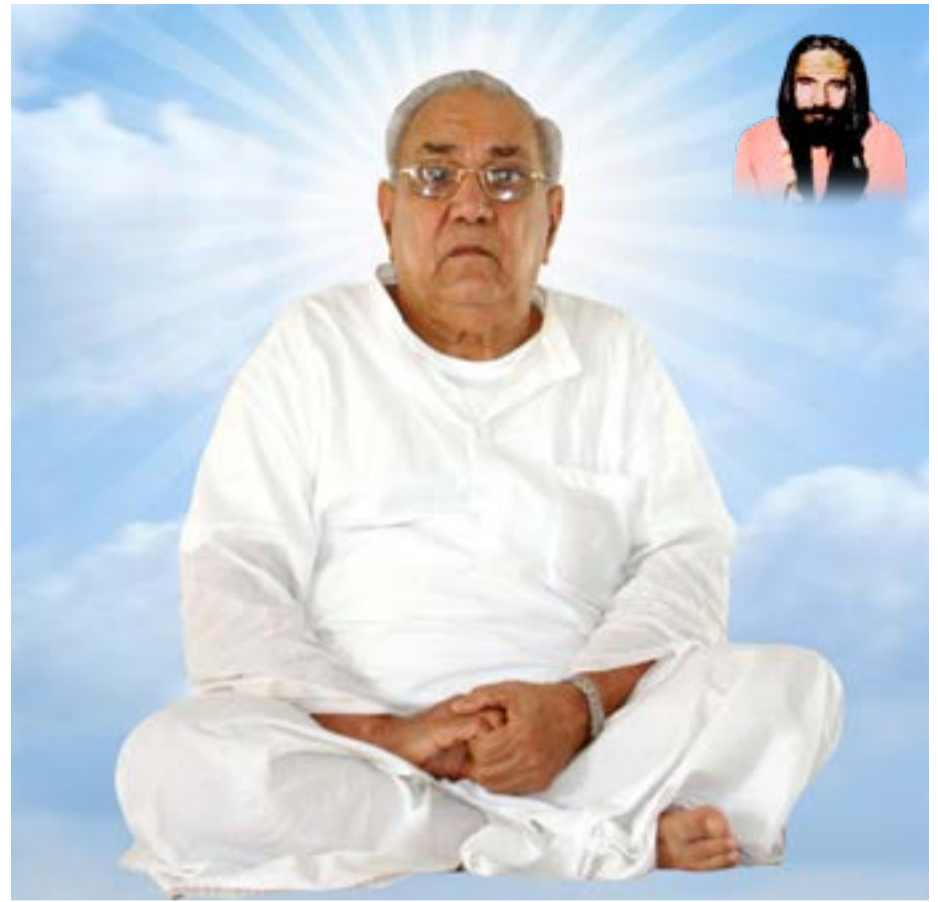
ध्यान की विधि:

1) आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से देखें। अपनी समस्या के समाधान हेतु गुरुदेव से करुण प्रार्थना करें।

2) फिर आँखें बंद करके समर्थ सदगुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं) केन्द्रित कर, गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करुण प्रार्थना करें।

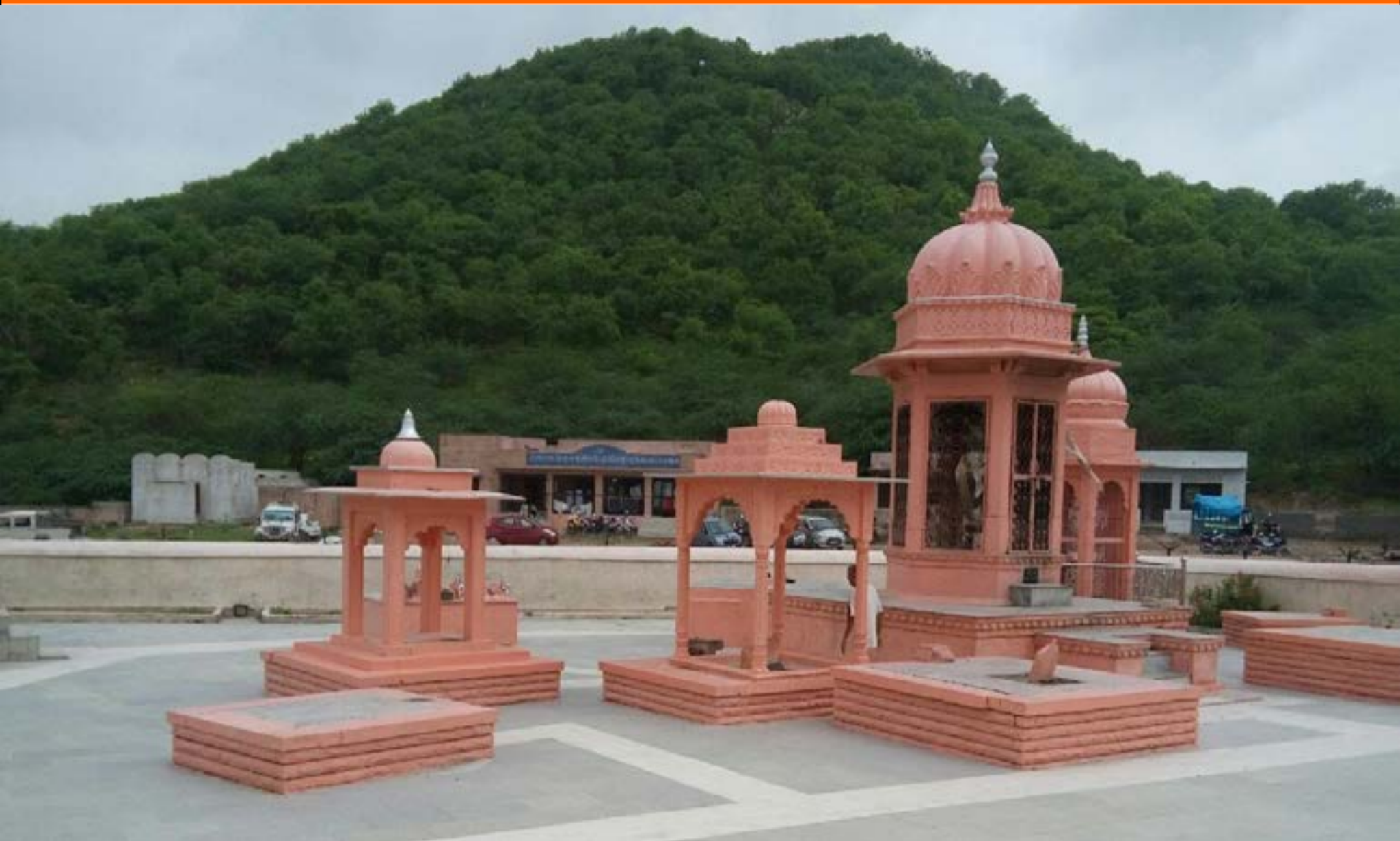
अब गुरुदेव द्वारा दिये गए संजीवनी मंत्र का मानसिक रूप से सघन जप करें (बिना होंठ-जीभ हिलाए)। **नाम जप ही ध्यान की चाबी (Key) है।** इसको तेल की धार की तरह, हर समय (Round the clock) सघन मंत्र जप करें। इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणायाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ये क्रियाएँ शारीरिक विकारों को ठीक करने के लिए होती हैं। ध्यान अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी। इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रूप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।

संजीवनी मंत्र के लिए यहाँ [CLICK](#) करें!



सिद्धयोग (ध्यान) से निम्न परिवर्तन:

- 1) भारतीय योगदर्शन से समस्त प्रकार के शारीरिक रोगों जैसे- एड्स, कैंसर, हीमोफीलिया, गठिया, ब्लडप्रेसर, डायबिटिज, टी.बी., हेपेटाइटिस आदि से मुक्ति संभव।
- 2) समस्त प्रकार के मानसिक रोगों जैसे - मानसिक तनाव, पागलपन, फोबिया (भय) व अनिद्रा आदि से मुक्ति संभव।
- 3) विद्यार्थियों की स्मरणशक्ति (Memory Power), एकाग्रता (Concentration) व सात्विक वृत्ति में अभूतपूर्व वृद्धि।
- 4) आध्यात्मिकता के पूर्ण ज्ञान के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं को ध्यान के दौरान प्रत्यक्ष देखना और सुनना।
- 5) गृहस्थ जीवन में रहते हुए "भोग" व "मोक्ष" दोनों तत्वों की सहज प्राप्ति।
- 6) संपूर्ण मानवजाति का दिव्य रूपांतरण।



आईपंथी नाथों की तपोभूमि काजलवास धाम

पिछले अंक के लिए यहाँ **CLICK** करें!



WhatsApp: [+91 9822318019](https://wa.me/+919822318019)
[+91 9552244937](https://wa.me/+919552244937)



E-Mail: gssymh7@gmail.com

CONNET
WITH US :

